गोल-गोल पानी!

महेश कुमार बसेड़िया

पिछले दिनों मैंने मारागाँव में कुँआ खुदते देखा तो अपना बचपन याद आ गया। उन दिनों हमारी नींद ही कुँए पर पानी भरने आई औरतों की बातचीत, बर्तनों की खनखनाहट और कुँए की चरखी की खड़खड़ाहट की आवाज़ से खुलती थी। क्या शानदार जगह होती थी यह!

लेकिन आज हैंडपम्प और ट्यूबवेलों के ज़माने में कुँए कम ही नज़र आते हैं। ऐसे में कुँआ खुदता देखना मेरे लिए आश्चर्य से कम नहीं था। मैं जा पहुँचा कुँआ खोदने वालों से बातचीत करने...

लगभग 25-30 सालों से हरगोविन्द कुँआ खोदने का काम कर रहे हैं। अब तक वे 19 कुँए खोद चुके हैं। बहुत समय पहले उनके पास के गाँव में कुँआ खुद रहा था। उसे देखते-देखते ही वे कुँआ खोदना सीख गए। अब उनके छोटे भाई और भतीजे यह काम करते हैं। वे तो बस सलाह मशविरा देते हैं।

एक कुँआ खोदने में कितना समय लगेगा यह कई बातों पर निर्भर करता है। जैसे, वह कितना गहरा और चौड़ा है, वहाँ की मिट्टी कैसी है। वैसे एक सामान्य कुँआ खुदने में 3-4 महीने लग जाते हैं। बरसातों में कुँआ खोदने का काम बन्द रहता है।

कुँआ खोदने में कम से कम 5 से 8 लोग लगते हैं। कुँए के अन्दर-बाहर सामान भेजने-लाने वाले मोटे रस्से को खींचने में ही दो या ज़्यादा लोग लग जाते हैं। एक आदमी चरखी के पास रहता है। वह रस्सा खींचने या रोकने का इशारा करता रहता है। वह इस बात का भी ध्यान रखता है कि किसी तरह की दुर्घटना होने के पहले ही वह लोगों को सचेत कर सके। जैसे कुँए की मिट्टी कहीं से धसक तो नहीं रही है। मिट्टी को कुँए से दूर ले जाने का काम मज़दूर करते हैं। कुँए के अन्दर ले जाने वाले सामान को चरखी तक लाने का काम भी इन्हीं के ज़िम्मे होता है। 2-3 लोग कुँए के अन्दर की मिट्टी को बाहर भेजते हैं। कुँए के अन्दर ईंटों की चिनाई करते हैं या सीमेंट, कॉंक्रीट के रिंग बनाते हैं।

कुँआ खोदने के लिए गैंती (कुदाल), फावड़ा, तसला, बालटी, डला (डोलचा) जैसे औज़ार लगते हैं। डोलचे को रस्सियों से कसकर मज़बूत बना लिया जाता है। इससे कुँए की मिट्टी को बाहर भेजा जाता है। चरखी (घिर्री या कड़ारू) और मोटा रस्सा जिसे पहले अड़ननाथ कहते थे, सन से बनता है।

इसी बीच दोपहर के खाना का समय हो गया। हरगोविंद के भाई-भतीजे – जयराम, रामगोपाल और बबलू भी आकर हमारी बातचीत में शामिल हो गए।

मैंने पूछा कुँआ खोदने का काम फायदे का है? उन्होंने बताया कि है तो फायदे का। एक तो इसमें मज़दूरी ज़्यादा मिलती है और दूसरा, कुँआ खुदने तक लगातार काम रहता है। पहले 75 से 100 रुपए रोज़ मिलते थे। अब 200 से 250 रुपए तक मिल जाते हैं। कुँए की चौड़ाई-गहराई के हिसाब से मज़दूरी बढ़ जाती है। लेकिन अब बहुत कम कुँए खुदते हैं इसलिए काम ही नहीं मिलता।

कुँआ एक गिलास की तरह ऊपर से चौड़ा और नीचे की ओर सँकरा होता है ताकि मिट्टी ढहे नहीं। रामगोपाल ने बताया कि यदि 10 फीट चौड़ा कुँआ खोदना है तो सबसे ऊपर 14 फीट और सबसे नीचे 12 फीट चौड़ा खोदेंगे। इसमें ऊपर से नीचे तक 10 फीट चौड़े रिंग बनाए जाएँगे या ईंटों की चिनाई की जाएगी। बचे हिस्से में मिट्टी भर दी जाएगी।

जयराम ने बताया कि 25-30 फीट से ज़्यादा गहराई में उतरने के बाद गर्मी और उमस इतनी बढ़ जाती है कि आदमी ठण्ड के दिनों में भी पसीने में नहा जाता है। मुझे हैरानी हुई। मैं तो समझता था कि मिट्टी में नमी के कारण वहाँ ठण्डक रहती होगी। अब तक चुपचाप बैठे बबलू ने बताया कि हवा के अभाव में दम भी घुट सकता है। इसलिए गहराई में ज़्यादा देर काम नहीं किया जाता है। सबसे ज़्यादा दुर्घटनाएँ कुँआ के अन्दर काम करने वाले लोगों के साथ होती हैं। वे लोग हेलमेट पहने बिना ही काम करते हैं। उन्होंने बताया ऊपर से गिरे मिट्टी के ढेले की चोट भी ज़ोर की लगती है।

बातचीत से पता चला मारागाँव का सबसे पुराना कुँआ दीवानजी ने लगभग 100 साल पहले खुदवाया था।

मेरे इतने सवालों के बाद उन्होंने मुझसे पूछ ही लिया कि मैं इतनी जानकारी क्यों ले रहा हूँ? मैंने बताया कि *चकमक* पत्रिका के लिए यह सब पूछताछ कर रहा हूँ। तो उन्होंने कहा कि उनको भी ज़रूर पत्रिका देना। मैंने उनको "हाँ" करके विदा ली।

सभी फोटोः महेश बसेड़िया